INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

अनवर का जाना : एक युग का अंत

By : INVC Team Published On : 3 Jan, 2018 07:22 AM IST

इस योग्य और महान साहित्य शिल्पी का महत्व पिछली बसपा सरकार में भी समझा गया था

- घनश्याम भारतीय -

देश में फैले धार्मिक विद्वेष से उपजी कटुता से दूर हटकर समाज को प्यार मोहब्बत और साम्प्रादायिक सौहार्द की सीख देने वाले प्रख्यात शायर, संवाद लेखक व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मंच संचालक अनवर जलालपुरी ने आज आंखे मूंद ली और अपने चाहने वालों को बदहवास छोड़ दुनिया से रुख़सत हो गये। उन्हें पिछली सरकार में यशभारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें आज मरहूम लिखने में हाथ कांप गये।

लगभग चार दशक तक प्रभावशाली शायरी और अपने उद्बोधन के जरिये हिन्दुस्तान के अलावा उसकी सरहद के पार दुनिया के तमाम देशों में अपनी माटी का नाम रोशन करने वाले इस साहित्य के पुरोधा ने उर्दू शायरी में गीता लिखकर अमरत्व प्राप्त कर लिया। प्रख्यात संत पल्टू दास की सरजमी पर जन्में पले बढे अंग्रजी के विद्वान और उर्दू ,अरबी के ज्ञाता अनवर जलालपुरी ने संत पल्टू दास की रचना- "डाल डाल पर अल्लाह लिखा है पात पात पर राम " से प्रेरित होकर सांप्रादायिक सौहार्द बनाये रखने का जो बीडा उठाया था उसे आजीवन बखूबी ढोते रहे।

जब हिन्दुस्तान की सरजमी पर गुलामी छटपटा रही थी और आजादी मिलने में महज एक माह नौ दिन का समय शेष था तब जलालपुर कस्बे में हाफिज मो हारून के पुत्र के रूप में 6 जुलाई 1947 को जन्में अनवर जलालपुरी वास्तव में विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। प्राथमिक शिक्षा स्थानीय स्तर पर ग्रहण करने के बाद उन्होंने गोरखपुर विश्व विद्यालय से 1966 में अंग्रेजी अरबी, और उर्दू विषय के साथ स्नातक और 1968 में अलीगंज मुस्लिम विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एमए और अवध विश्व विद्यालय से उर्दू में एमए और जामिया मिल्लिया अलीगढ से अदीब कामिल की डिग्री हासिल करने के बाद परूइया आश्रम सहित कई शिक्षण संस्थानों में प्राइवेट शिक्षक के रूप में शिक्षा दी। लेकिन नरेन्द्र देव इंटर कालेज जलालपुर में जहां वे छात्र हुआ करते थे वहीं अंग्रेजी प्रवक्ता नियुक्त हुए तब उनके जीवन में स्थायित्व आया। यहीं से जागृत हुआ उनके अंदर के अदब का विरवा विशाल बट वृक्ष का रूप लिया।

अनवर जलालपुरी के अंदर का साहित्य मेगा सीरियल अकबर द ग्रेट में उभर कर सामने आया। उन्होने इस प्रख्यात सीरियल के लिए गीत और संवाद लेखन का कार्य 1996 में किया। इसी के साथ हिन्दी फिल्म डेढ इश्किया में नसीरूद्दीन शाह और माधुरी दीक्षित के साथ शायर और मंच संचालक की भूमिका निभा कर सोहरत बटोरी। सोहरत का यह सिलसिला अनवर जलालपुरी के जीवन के साथ चलता रहा । पिछले 40 वर्षो से राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर होने पर कवि सम्मेलनों और मुशायरों में अनवर जलालपुरी आवश्यक अंग हुआ करते थे। अरब राष्ट्रों में स्थित भारतीय दूतावासों में आयोजित मुशायरों का संचालन अनवर जलालपुरी के बिना फीका पड जाता था। उन्होने अमेरिका, कनाडा, पाकिस्तान, इग्लैण्ड सहित अरब राष्ट्रों में भारतीय मूल के नागरिकों द्वारा आयोजित सहित्यिक सम्मेलनों का संचालन कर अपने देश का नाम ऊंचा किया। नरेन्द्रदेव इण्टर कालेज के अंग्रेजी प्रवक्ता के पद से सेवा निवृत्त होने के बाद लखनऊ में रह कर इस शायर ने जब हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रंथ गीता का काव्यात्मक अनुवाद उर्दू शायरी में किया तो देश के साहित्य जगत में एक नई चर्चा छिड गयी। इस महान कार्य के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने उन्हें यशभारती पुरस्कार प्रदान किया।

इसके पूर्व अनवर जलालपुरी ने तोश-ए-आखिरत, उर्दू शायरी में गीताजंलि, उर्दू शायरी में रूबाईयाते खय्याम, जागती आंखे, खुशबी की रिस्तेदारी, खारे पानियों का सिलसिला, रोशनायी के सफीर, अपनी धरती अपने लोग, जरबे लाइलाह, जमाले मोहम्मद, बादअज खुदा, अरफे अब्जद, राहरौ से रहनुमा तक पुस्तके साहित्य जगत को दी। इसके अलावा अदब के अक्षर, कलम का सफर, और सफीराने अदब भी लिखा। अनवर जलालपुरी को उनके कार्यो के लिए उत्तर प्रदेश गौरव, फिराक सम्मान, माटी रत्न सम्मान सहित दर्जनों सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। उन्होंने सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में ही काम किया हो ऐसा नहीं, बल्कि जलालपुर में मिर्जागालिब इंटर कालेज की स्थापना करके शिक्षा की भी लौ जलायी है। जिसके वे संस्थापक प्रबन्धक रहे है।

इस योग्य और महान साहित्य शिल्पी का महत्व पिछली बसपा सरकार में भी समझा गया था । तब उन्हें उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद का चेयर मैन बनाते हुए राज्यमंत्री का दर्जा दिया गया था लेकिन उन्होंने साहित्य के आगे सियासत का हमेशा बौना ही समझा। वास्तव में अनवर जलालपुरी व्यक्ति विशेष का नहीं, विचारों के एक पुन्ज का दूसरा नाम है। उनके व्यवहार में भी साहित्य का भरपूर समावेश हर समय देखा जा सकता है। पहली ही मुलाकात में गैरों के भाई बन जाने और गैरों कों अपना बना लेने की कला उनके अंदर कूट कूट कर भरी थी। मेंरा करीब एक दशक का समय उनके सानिध्य में बीता है इसलिए मैं यह बात अत्यन्त विश्वास के साथ कह सकता हूं कि जिसने अनवर जलालपुरी को समझ लिया उसने साहित्य और अध्यात्म के गूढ़ रहस्य को समझ लिया और जो उन्हें नहीं समझ पाया वह कुछ भी नहीं समझ पाया। बीते दिनों उन्हें ब्रेन हेमरेज होने के बाद लखनऊ स्थित मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था । जहां इलाज के दौरान आज 2 जनवरी 2018 को प्रात: लगभग 10:00 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली । वास्तव में अनवर जलालपुरी का जीवन एक पेचीदा किताब था । जिसे पढ़ना तो आसान था मगर समझना बहुत कठिन था । उनके अचानक रुखसत होने से भारतीय साहित्य को एक गहरा आघात लगा है। जिसकी भरपाई शायद कभी नहीं हो पाएगी ।

परिचय :-

घनश्याम भारतीय

स्वतंत्र पत्रकार/स्तम्भकार

भारत गौरव सम्मान से सम्मानित पत्रकार

संपर्क :-ग्राम व पोस्ट-दुलहूपुरजनपद-अम्बेडकरनगर (यू0पी0) मो0-9450489946

ई-मेल : ghanshyamreporter@gmail.com

Disclaimer : The views expressed by the author in this feature are entirely his own and do not necessarily reflect the views of INVC NEWS.

URL : https://www.internationalnewsandviews.com/अनवर-का-जाना-एक-युग-का-अंत/

INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.